

Padma Shri



SHRI TSERING NAMGYAL

Shri Tsering Namgyal is a very creative Woodcraft artist belonging to Nyanpa family in village Hinju (Ladakh) in which wood carving has been practised over successive generations. He learnt the art of wood carving at a young age and has been working for the last more than four decades towards the preservation and promotion of this unique tradition of Wood Carving in the Northern Himalayan state of Ladakh.

2. Born on 31st January, 1955 in Hinju, Ladakh, Shri Namgyal learnt the basic skills of art of woodcraft in the family and later underwent rigorous training for over five years (1976-1981) from renowned wood carving master of Wanla Shri Tsering Stobdan. He worked in most of the monasteries in Ladakh. He has immensely contributed in the preservation of the traditional art of woodcarving and promotion of an important intangible cultural heritage of Ladakh. He imparted training in wood carving to hundreds of young craft-persons ensuring the passage of the art of woodcarving to future generations and in-turn helping to preserve this traditional art. He participated in many programmes for the promotion and preservation of this unique art like radio and TV talks, seminars, lectures and craft-melas to showcase the art. He provided expertise and guidance in the designing of the new art by fusion of traditional and modern styles of woodcarving. Through this art he is providing scope for self-employment and source of livelihood to hundreds of unemployed youths.

3. Shri Namgyal, during 33rd Kalachakra Teachings in Ladakh in 2014, especially designed and crafted the Solchok (elaborately designed tea table) for His Holiness Dalai Lama and the Kilkhor (rack) for Kalachakra Mandala. In 2008 he worked on the wooden shrines of Lamayuru monastery (oldest monastery in Ladakh). He also designed the throne and scripture or statue cases at the largest monastery Hemis in 2007. He crafted 25 wooden main doors called Shing-stags at Chemdey, Matho and Tserkarmo monasteries. The wooden throne design for the head of the Drukpa lineage during the Great Naropa Festival (Kumbh Mela of Himalayas) at Shey in 2004 was also crafted by him. In 2003 he worked on the elaborate 60 by 15 feet highly decorative shelves for statues and scriptures at Leh Chokhang Vihara (Main monastery in Leh town). A 3-storey wooden crafted Zang-doug Spalri Temple at Chumathang and the grand altar of Tara temple and exquisite wooden throne at Thiksey monastery are some of the exceptional wooden arts crafted by him.

4. Shri Namgyal is an expert in traditional and modern styles of wood carving. His woodcraft designs involve Jugskhang (elaborately designed statue and scripture case), Jugthis (wood crafted throne), Solchok (designed tea table), Zimtom (elaborately designed bed for high Lamas) and Shing-stags (Wooden doors and windows with exquisite design). He contributed in wood carving designing across Ladakh in many monasteries and individual houses. Some of major monasteries where his work can be seen are Hemis, Thiksey, Main Chokhang Vihara Leh, Phyang, Lamayuru, Likir, Matho, Sankar, Kharboo in Kargil, Wanla, Chemdey, Tia-Timosgang, Chemdey, Chumathang (in Changthang) and Khatysa monastery.

5. Shri Namgyal received National Merit Certificate in Woodcarving in 2007 in recognition of his contributions in craftsmanship and the development of the art of woodcraft from the Development Commission (Handicrafts), Ministry of Textiles. He also received certificate of appreciation for his work from the Office of Craft Union Leh (1994); Thiksey Monastery (2004); Hemis Monastery (2007); Ladakh Buddhist Association (2008); Lamayuru Cultural and Welfare Society(2008); Surajkund Mela Authority (2009); Phyang Monastery and All Ladakh Gonpa Association (2014).

पद्म श्री



श्री सेरिंग नामग्याल

श्री सेरिंग नामग्याल हिंजू गाँव (लद्दाख) के न्यानपा परिवार के बहुत रचनात्मक काष्ठशिल्पी (वुडक्राफ्ट) हैं। इस परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी काष्ठ नक्काशी का काम किया जाता रहा है। उन्होंने छोटी उम्र में काष्ठ नक्काशी कला सीखी और पिछले चार दशकों से ज्यादा समय से उत्तरी हिमालयी लद्दाख क्षेत्र में काष्ठ नक्काशी की इस अनूठी परंपरा के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में काम कर रहे हैं।

2. 31 जनवरी, 1955 को हिंजू, लद्दाख में जन्में, श्री नामग्याल ने काष्ठशिल्प की कला का बुनियादी कौशल परिवार से सीखा और बाद में वानला के काष्ठ नक्काशी के मशहूर उस्ताद श्री सेरिंग स्तोब्दन से पांच साल (1976–1981) तक कठोर प्रशिक्षण लिया। उन्होंने लद्दाख के अधिकांश मठों में काम किया। उन्होंने पारंपरिक काष्ठ नक्काशी कला के संरक्षण और लद्दाख की एक महत्वपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने सैकड़ों युवा शिल्पकारों को काष्ठ नक्काशी का प्रशिक्षण दिया, जिससे काष्ठ नक्काशी कला भावी पीढ़ियों तक पहुंचे और इस पारंपरिक कला को संरक्षित करने में मदद मिले। उन्होंने इस अनूठी कला के प्रचार और संरक्षण के लिए कई कार्यक्रमों में भाग लिया जैसे रेडियो और टीवी वार्ता, सेमिनार, व्याख्यान और शिल्प-मेला और इस कला का प्रदर्शन किया। उन्होंने काष्ठ नक्काशी की पारंपरिक और आधुनिक शैलियों के मिश्रण से नई कला की डिजाइनिंग में विशेषज्ञता और मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कला के जरिये वह सैकड़ों बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार और आजीविका का साधन प्रदान कर रहे हैं।

3. 2014 में लद्दाख में 33वें कालचक्र प्रवचन के दौरान, श्री नामग्याल ने विशेष रूप से हिज होलीनेस दलाई लामा के लिए सोलचोक (बारीक नक्काशी वाली चाय की मेज) और कालचक्र मंडल के लिए किलखोर (रैक) डिजाइन किया और बनाया। 2008 में उन्होंने लामायुरु मठ (लद्दाख का सबसे पुराना मठ) के लकड़ी के उपासना स्थलों पर काम किया। उन्होंने 2007 में सबसे बड़े मठ हेमिस में सिंहासन और धर्मग्रंथ या मूर्ति रखने वाले केस की डिजाइन बनाई। उन्होंने चेमडे, माथो और सेरकारमो मठों में 25 शिंग-स्टैग नामक लकड़ी के मुख्य दरवाजे तैयार किए। 2004 में ग्रेट नरोपा फेस्टिवल (हिमालय का कुंभ मेला) के दौरान द्रुक्पा वंश के प्रमुख के लिए लकड़ी के सिंहासन का डिजाइन भी उन्होंने ही तैयार किया था। चुमाथांग में काष्ठ निर्मित तीन मंजिला जंग-डौगस्पलरी मंदिर और तारा मंदिर की भव्य वेदी और ठिकसे मठ में लकड़ी का सुंदर सिंहासन उनके द्वारा तैयार कुछ असाधारण काष्ठ कलाओं के उदाहरण हैं।

4. श्री नामग्याल काष्ठ नक्काशी की पारंपरिक और आधुनिक शैलियों के विशेषज्ञ हैं। उनकी काष्ठशिल्प डिजाइन में जुगशांग (विस्तृत रूप से डिजाइन किया गया मूर्ति और धर्मग्रंथ का केस), जुगथिस (लकड़ी की नक्काशी वाला सिंहासन), सोलचोक (डिजाइन की गई चाय की मेज), ज़िमटॉम (बड़े लामाओं के लिए विस्तृत डिजाइन किया गया बिस्तर) और शिंग-स्टैग (उत्कृष्ट डिजाइन वाले लकड़ी के दरवाजे और खिड़कियां) शामिल हैं। उन्होंने लद्दाख में कई मठों और घरों में काष्ठ नक्काशी की डिजाइनिंग में योगदान दिया। हेमिस, थिकसे, मेन चोखांग विहार लेह, फयांग, लामायुरु, लिंकिर, माथो, संकर, कारगिल में खारबू, वानला, चेमडे, तिया-तिमोसगैंग, चेमडी, चुमाथांग (चांगथांग में) और खतिसा मठ जैसे कुछ प्रमुख मठों में उनका काम देखा जा सकता है।

5. शिल्प कौशल और काष्ठशिल्प की कला के विकास में उनके योगदान का सम्मान करते हुए विकास आयोग (हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय, ने 2007 में श्री नामग्याल को वुडकार्विंग में राष्ट्रीय योग्यता प्रमाणपत्र प्रदान किया। उन्हें ऑफिस ऑफ़ क्राफ्ट यूनिशन लेह (1994), थिकसे मठ (2004); हेमिस मठ (2007); लद्दाख बौद्ध संघ (2008); लामायुरु सांस्कृतिक और कल्याण सोसायटी (2008); सूरजकुंड मेला प्राधिकरण (2009); फयांग मठ और ऑल लद्दाख गोन्पा एसोसिएशन (2014) से अपने कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र भी प्राप्त हुए हैं।